पद ५

(राग: भूप - ताल: धुमाळी)

(चाल:- कोण्या सुकृत दैव हे फळले)

प्रभु तुझ्या पदी मन मुरले। गृह कृत्य सर्व सोडियले, भान विसरले धावुनि आलें।।धु. ।। प्रभु पाहुनि मज लपला रे। शोधिता जीव थकला रे। हे नकळे खेळ कपटाचे, मज छळण्याचे, द्वैत गुजाचे ।।१।। जगी मिथ्या-तम बहु भरलें। मनी मीपण भावही भरले। हे काव्यबोध मग सरले, सत्व न उरले, सत्यही सरले।।२।। मम भासे एकचि भ्रमरे। कां कारण मिथ्या नर रे। हे नर ही बाळ प्रभु तूझे क्षमसी, न दूजे विण प्रभु तूझे।।३।। प्रभु तुझ्या चरणि मन जडले। जन्म सार्थक झाले माझे। हे सिद्ध प्रार्थि प्रभु तुजरे, प्रगट त्वरितरे, जन दु:ख हर रे।।४।।